भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर
प्रश्न बैंक (कक्षा 10) पाठ – साखी (कबीर)

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर – मीठी वाणी बोलने से सुनने वाले के मन से क्रोध और घृणा के भाव नष्ट हो जाते हैं जिससे उन्हें सुख प्राप्त होता है। इसके साथ ही हमारे मन के अहंकार का भी नाश होता है और हमारा अंतःकरण भी प्रसन्न हो जाता है। हमारे हृदय को शांति मिलती है जिससे तन को शीतलता प्राप्त होती है। प्रभावस्वरूप औरों को सुख और तन को शीतलता प्राप्त होती है।

2. दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – जब हमारे मन में अहंकार होता है, तब ईश्वर नहीं होते। जब ईश्वर हमारे मन में वास करने लगते हैं, तब अहंकार दूर भाग जाता है। यहाँ दीपक का मतलब ईश्वर या भक्ति रूपी ज्ञान से है तथा अंधकार का मतलब अहंकार और अज्ञान से है। जिस प्रकार दीपक के जलने पर अंधकार समाप्त हो जाता है, ठीक उसी प्रकार जब ज्ञान का दीपक हृदय में जलता है, तब मन के सारे विकार अर्थात् अहंकार, भ्रम, संशय आदि का नाश हो जाता है।

3. ईश्वर कण–कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?

उत्तर – हमारा मन अज्ञान, अहंकार और विलासिताओं में डूबा रहता है। हम ईश्वर को मंदिरों, मस्जिदों में ढूँढ़ते हैं जबकि वह कण-कण में है, सब ओर व्याप्त है और मनुष्य के हृदय में निवास करता है। अपने अज्ञान के कारण हम ईश्वर को देख नहीं पाते हैं। कबीर ने कस्तूरी मृग का उदाहरण देते हुए यह समझाया है कि कस्तूरी मृग की नाभि में कस्तूरी नामक सुगंधित पदार्थ होता है, जिसकी सुगंध से आकर्षित होकर वह उसे खोजते हुए पूरे वन में भटकता-फिरता है। उसी प्रकार मनुष्य भी ईश्वर को बाहर ढूँढ़ता-फिरता है।

4. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – कवि के अनुसार संसार में वे लोग सुखी हैं, जो संसार में व्याप्त सुख-सुविधाओं का भोग करते हैं और दुखी वे हैं, जिन्हें ज्ञान की प्राप्ति हो गई है और जो ईश्वर का ध्यान लगाकर जागते रहते हैं। यहाँ 'सोना' अज्ञान का प्रतीक है और 'जागना' ज्ञान का प्रतीक है। जो लोग संसार में उपलब्ध सुख-सुविधाओं को ही वास्तविक सुख समझते हैं, वे अज्ञानी हैं और सोए हुए हैं। वास्तविक ज्ञान ईश्वर को जानना है क्योंकि वह अनश्वर है। जो यह काम कर रहा है, वह जाग रहा है। इसका आशय यह है कि जो लोग सांसारिक सुखों में खोए रहते हैं, जीवन के भौतिक सुखों में लिप्त रहते हैं वे सोए हुए हैं और जो सांसारिक सुखों को व्यर्थ समझते हैं, अपने को ईश्वर के प्रति समर्पित करते हैं, वे ही जागते हैं। वे संसार की दुर्दशा को दूर करने के लिए चिंतित रहते हैं।

5. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर – अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने बताया है कि हमें अपने आसपास निंदक रखने चाहिए ताकि वे हमारी त्रुटियाँ बता सकें, हमें हमारी बुराइयों से अवगत करा सकें और हम उन बुराइयों को अपने अंदर से दूर कर सकें। इससे हम अपने स्वभाव को बिना पानी और साबुन के स्वच्छ और निर्मल बना पाएँगे। निंदक हमारे सबसे अच्छे हितैषी होते हैं। उनके द्वारा बताई गई त्रुटियों को दूर करके हम अपने स्वभाव को निर्मल बना सकते हैं। अतः स्वयं के परिमार्जन के लिए निंदकों को अपने घर के आँगन में एक कुटिया बनवाकर प्रतिष्ठित तरीके से रखने की सलाह कबीरदास ने दी है।

6. 'ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होई' –इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?
उत्तर – इन पंक्तियों द्वारा कवि ने प्रेम की महत्ता को बताया है। ईश्वर को पाने के लिए एक अक्षर प्रेम का अर्थात् ईश्वर-भक्ति का पढ़ लेना ही पर्याप्त है। ईश्वर ही एकमात्र सत्य है। बड़ी-बड़ी पोथियाँ या ग्रंथ पढ़कर कोई पंडित नहीं बन जाता। केवल परमात्मा का नाम स्मरण करने से ही वास्तविक ज्ञानी बना जा सकता है।

7. कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – कबीर ने अपनी साखियाँ सधुक्कड़ी भाषा में लिखी हैं। इनकी भाषा मिली-जुली है। इनकी साखियाँ संदेश देने वाली होती हैं। इनकी साखियाँ जनमानस को जीने की कला सिखाती हैं। इन्होंने अवधी, पंजाबी, ब्रज, भोजपुरी और राजस्थानी आदि भाषाओं का मिश्रित प्रयोग किया है। इसी कारण उनकी भाषा को 'पचमेल खिचड़ी' कहा जाता है। उनकी भाषा में तद्भव तथा देशी शब्दों का अनूठा मेल भी है। वे जैसा बोलते थे, वैसा ही लिखा है। लोकभाषा का भी प्रयोग हुआ है; जैसे – खायै, मुवा, जाल्या, आँगणि आदि। भाषा-शैली में लयबद्धता, उपदेशात्मकता, प्रवाह, सहजता तथा सरलता है। दोहा छंद में लिखी गई इन साखियों में मुक्तक शैली का प्रयोग है तथा गीति-तत्त्व के सभी गुण विद्यमान हैं। इनकी भाषा में अलंकार भी मिलते हैं। भाषा पर कबीर के ज़बर्दस्त अधिकार को देखते हुए श्री हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने इन्हें 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है। भाषा उनके लिए साधन थी, साध्य नहीं।

(ख) भाव स्पष्ट कीजिए – 1. बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।
उत्तर – इस पंक्ति का भाव है कि जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम रूपी विरह का सर्प बस जाता है, उस पर कोई मंत्र असर नहीं करता है। अर्थात् भगवान के विरह में कोई भी जीव सामान्य नहीं रहता है। उस पर किसी बात का कोई असर नहीं होता है।

2. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।
उत्तर – इस पंक्ति में कबीर कहते हैं कि कस्तूरी हिरण अपनी नाभि से आती सुगंध पर मोहित रहता है, परन्तु वह यह नहीं जानता कि यह सुगंध उसकी नाभि में से आ रही है। वह उसे इधर-उधर ढूँढता रहता है। उसी प्रकार अज्ञानी भी वास्तविकता से अनजान रहता है। वह आनंदस्वरूप ईश्वर को प्राप्त करने के लिए विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों में लिप्त रहता है। वह आत्मा में विद्यमान ईश्वर की सत्ता को पहचान नहीं पाता।

3. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
उत्तर – इस पंक्ति द्वारा कबीर का कहना है कि जब तक मनुष्य में अज्ञान एवं अहंकार रूपी अंधकार छाया है, वह ईश्वर को नहीं पा सकता। अर्थात् अहंकार और ईश्वर का साथ–साथ रहना नामुमकिन है। जब ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है, तब अहंकार दूर हो जाता है।

4. हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि। अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि।।
भावार्थ – कबीर कहते हैं कि उन्होंने अपने हाथों से अपना घर जला लिया है यानी उन्होंने मोह-माया रूपी घर को जलाकर ज्ञान प्राप्त कर लिया है। अब उनके हाथों में जलती हुई मशाल है यानी ज्ञान है। अब वे उसका घर जलाएँगे, जो उनके साथ चलना चाहता है यानी उसे भी मोह-माया के बंधन से आज़ाद होना होगा, जो ज्ञान प्राप्त करना चाहता है।